विश्व न्याय मन्दिर
26 नवम्बर 2007

विश्व के बहाई बन्धुओं के नाम

परमप्रिय मित्रो,

मात्र दो महीने पूर्व, हमारे बीच जीवित बचे आखिरी धर्मभुजा डॉ. अली मुहम्मद वर्गा के निधन के बाद की परिस्थिति में, इस संविदा दिवस के अवसर पर हम धर्मभुजाओं की संस्था पर विचार-मनन के लिए उत्प्रेरित हुए हैं। हमारे विश्व समुदाय को यह गंभीर क्षति शोगी एफेन्दी के देहावसान की 51वीं वार्षिकी से महज दो सप्ताह पूर्व झेलनी पड़ी है। वस्तुतः, यह महसूस करना कितना गांभीर्यपूर्ण है कि डॉ. वर्गा के निधन ने एक ऐसी संस्था के महत्वपूर्ण दिग्दर्शन का अंत उपस्थित कर दिया जिसकी विरासत धार्मिक इतिहास में अनुपमेय रही है! प्रभुधर्म के रचनात्मक युग की ऐसी महत्वपूर्ण इस बेला में यही समुचित है कि प्रशासनिक व्यवस्था के ऐसे अग्रणी निकाय की उपलब्धियों की महत्ता को पहले से भी अधिक गहनता से जानने-समझने का प्रयास किया जाए - वह निकाय जोकि हमारे विश्व समुदाय के नवोदय के वर्षों में इसके विकास के लिए एक अत्यंत अंतर्भूत घटक सिद्ध हुआ।

इस संस्था का उद्‌गम हम स्वयं बहाउल्लाह के निकट पाते हैं जिन्होंने अपनी शिक्षा के चार सुप्रसिद्ध संवर्द्धकों को ‘धर्मभुजाओं’ के रूप में मनोनीत किया। प्रभुधर्म की प्रशासनिक व्यवस्था के उद्‌घाटन से पूर्व की अवधि में, अपने व्यक्तिगत जीवन की सच्चरित्रता और साथ ही प्रभुधर्म की शिक्षा के प्रसार और पथभ्रामक तत्वों से इसकी रक्षा करने के अपने अनवरत प्रयासों के कारण वे बन्धुओं के लिए एक धुरी-केन्द्र बन गए। भीषण यातनाओं - जिनमें कुछ मामलों में तो सत्ताधीशों द्‌वारा उन्हें दिया गया कारावास का दंड भी शामिल था - के बावजूद वे अपने इन कार्यकलापों में दृढ़तापूर्वक जुटे रहे। ये विशिष्ट व्यक्तित्व वाले मनीषी अब्दुल-बहा के धर्म-मंत्रित्व काल में भी सक्रिय रहे, जिन्होंने 1899 में उन्हें तेहरान की स्थानीय आध्यात्मिक सभा के गठन के लिए कदम उठाने के निर्देश दिए जिसमें रहकर उन्होंने अपनी सेवाएँ दीं। इन प्रथम धर्मभुजाओं द्‌वारा प्रभुधर्म के प्रसार और इसकी संरक्षा पर दिए गए मुख्य ध्यान तथा इसके साथ ही नए ईश्वरीय विधानों के महत्व के बारे में धर्मानुयायियों को सुशिक्षित करने के लिए उनके द्‌वारा किए गए प्रयासों के कारण उस समय भी यह आभास मिल गया था कि बहाई समुदाय के विकास के भावी चरण में इस संस्था की कार्य-प्रक्रिया का ढाँचा क्या होगा।

प्रिय मास्टर (अब्दुल-बहा) ने स्वयं किसी धर्मभुजा की नियुक्ति तो नहीं की किन्तु चार धर्मानुयायियों की ओर उन्होंने उनके मरणोपरांत ऐसा कहकर संकेतित किया। तथापि, उनके "इच्छापत्र और वसीयतनामा" में इस संस्था की पुष्टि की गई और उन्होंने पावन आत्माओं को इस रूप में नियुक्त करने के लिए धर्म-संरक्षक को प्राधिकृत करके इस संस्था का क्रम आगे जारी रखा। पहले-पहल, तीन दशकों की अवधि में, शोगी एफेन्दी ने ऐसे दस महात्माओं का उनके मरणोपरांत नामोल्लेख किया - वे सब के सब अपनी दृढ़ता, प्रबलता तथा प्रभुधर्म का प्रसार करने एवं इसके सर्वोत्तम हितों के विकास के लिए अपने प्रयासों की प्रभावशीलता के कारण विशिष्ट रूप से जाने-माने व्यक्ति थे। दिसम्बर 1951 में धर्म संरक्षक द्वारा बारह जीवित धर्मानुयायियों को धर्मभुजाओं के रूप में प्रतिनियुक्त किए जाने के साथ ही बहाई जगत को बहाउल्लाह की विश्व-व्यवस्था के संचालन की एक बिल्कुल नई गत्यात्मकता का परिचय प्राप्त हुआ, इसके माध्यम से धर्मभुजाओं ने - खास तौर पर 'ईश्वर के चिह्न' के आकस्मिक निधन के बाद की परिस्थिति में - दस वर्षीय योजना में एक अनूठी शक्ति का संबलन किया। फरवरी 1952 में, उनके द्वारा सात और नए धर्मभुजाओं की नियुक्ति और तत्पश्चात पाँच दिवंगत धर्मभुजाओं की जगह नई नियुक्तियों से जीवित धर्मभुजाओं की संख्या उन्नीस बनी रही, किन्तु अपने निधन से एक महीने से भी थोड़ा पहले बहाई विश्व के नाम अपने आखिरी सन्देश में शोगी एफेन्दी ने आठ और भी धर्मभुजाओं से परिचित कराया और इस प्रकार कुल संख्या हो गई सत्ताइस। शोगी एफेन्दी द्वारा उनका वर्णन "बहाउल्लाह के अंकुरणशील विश्वसंघ के प्रमुख दिग्दर्शक" के रूप में किए जाने से संसार को हिला कर रख देने वाले उस यथार्थ का पूर्वाभास मिला कि उनकी मृत्यु के बाद आने वाले कल में इन धर्मभुजाओं के ऊपर किन अप्रत्याशित दायित्वों का भार सौंपा जाने वाला है।

अब जबकि धर्म-संरक्षक सदा-सर्वदा के लिए विदा हो चुके थे तो उन्हें उन्मथित कर देने वाले इस दुःख के बावजूद इन धर्मभुजाओं का पहला दायित्व था शोक-संतप्त समुदाय की स्थिरता फिर से बहाल करना। निस्संदेह, इस दायित्व का एक परमावश्यक पहलू था मित्रों का ध्यान धर्म के भावी विकास की दिशा की ओर स्थिर करना। धर्मभुजाओं ने बड़े अनासक्त भाव से अपना कार्य किया। धर्म-संरक्षक की अंत्येष्टि के महज सोलह दिनों बाद, पवित्र भूमि से उन्होंने पूर्व और पश्चिम के बहाई बन्धुओं के नाम एक घोषणा प्रेषित की। उसमें उन्होंने यह स्पष्ट किया कि अच्छी तरह खोज-बीन के बावजूद शोगी एफेन्दी का कोई इच्छा-पत्र या निर्देश प्राप्त नहीं हो सका है और तब इस संदेश में उन्होंने उन प्रक्रियाओं का निर्धारण किया जिनका अनुपालन वे अपने सामने प्रस्तुत विकट चुनौती का सामना करने के लिए करने वाले थे। उसमें यह घोषणा की गई कि "अभिरक्षक" नाम से मनोनीत नौ धर्मभुजाओं का एक निकाय बहाई विश्व केन्द्र में रहकर कार्य करने के लिए गठित किया गया है जिसका काम होगा प्रभुधर्म की संरक्षा, दस वर्षीय योजना की प्रगति और प्रशासनिक विषयों पर राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभाओं से संवाद स्थापित किए रहना, तथा प्रभुधर्म

के विश्व केन्द्र के संरक्षण से जुड़े सभी मुद्दों पर ध्यान देना। इस प्रथम संवाद से हर जगह मित्रों को यह भरोसा हुआ कि धर्म संरक्षक की मृत्यु के कारण गंभीर रूप से उद्वेलित हुए समुद्र पर प्रभुधर्म रूपी जहाज सुरक्षापूर्वक अपने मुकाम की ओर बढ़ेगा। पवित्र भूमि में धर्मभुजाओं की बैठकों से जारी किए गए बाद के संदेशों से धर्मानुयायियों में और भी अधिक विश्वास का संचार हुआ और वे योजना में दिए गए लक्ष्यों की पूर्णाहुति के लिए उठ खड़े हुए।

पवित्र भूमि से बाहर रहने वाले धर्मभुजाओं ने, अपने-अपने क्षेत्रों में योजना की प्रगति पर गहन ध्यान देने के अतिरिक्त, हर प्रदेश में रहने वाले धर्मानुयायियों तक पहुँचने और उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए विस्तृत यात्राएँ प्रारंभ कीं। शोगी एफेन्दी द्वारा विरासत में दी गई योजना के कार्यों की प्रगति के लिए प्रत्येक अवसर का लाभ उठाते हुए उन्होंने धरती के चप्पे-चप्पे को अपनी यात्राओं के दायरे में समेटा। अब्दुल-बहा के "इच्छापत्र और वसीयतनामा" में उल्लिखित धर्मभुजाओं के कर्तव्यों का निर्वहन उसी परम निःस्वार्थता, निर्भयता और उमंग से किया गया जो उनके कार्य को एक विशेष स्वरूप प्रदान करती थीं। "ईश्वरीय सुरभि का प्रसार, लोगों की आत्माओं को सुशिक्षित करना, ज्ञान का संवर्द्धन, लोगों के चरित्र का उन्नयन" - इन सारे दायित्वों का निर्वहन उन्होंने उल्लेखनीय, और कई बार आश्चर्यजनक, परिणामों के साथ किया। ऐसी यात्राएँ दस वर्षीय योजना के समाप्त हो जाने के बाद भी थम नहीं गईं बल्कि अमातुल-बहा रुहिय्या खानुम की सुख्यात यात्राओं का क्रम उसी प्रवणता के साथ जारी रहा - वे यात्राएँ जिन्होंने अपरिमेय प्रेरणाओं को जन्म दिया। इस प्रकार धर्मभुजाओं के कार्यकलापों ने अपनी सर्वोत्तमता के साथ बहाउल्लाह के उस बयान की प्रभावशीलता झलकाई कि "जब ईश्वर के निमित्त भ्रमण किए जाएँगे तो उस भ्रमण मात्र से संसार पर सदा एक प्रभाव पड़ता आया है और अभी भी पड़ेगा।"

उनके सम्मिलित प्रयासों के उल्लेखनीय परिणामों में से प्रमुख ये रहे : एक स्वतंत्र एवं अविभाज्य व्यवस्था के रूप में प्रभुधर्म का अपना रुतबा कायम होना, फूट डाले जाने से प्रभुधर्म की रक्षा - बावजूद इसके कि उनके अपने ही उदात्त सहचरों में से एक, मैसन रेमी, ने संविदा के प्रति अपनी निष्ठा तोड़ डाली और जिसे बाहर निकाल देने के लिए धर्मभुजाओं को बाध्य होना पड़ा, विश्व केन्द्र स्थित परिसम्पत्तियों एवं पवित्र स्थलों तथा उद्यानों का संरक्षण, तथा प्रभुधर्म के व्यापक प्रसार में मिली सफलता। इन श्रम-साध्य उपलब्ध्यिं ने उस संक्रमण के पथ को सहज बनाया जिसे इन धर्मभुजाओं ने - धर्मप्रमुख के रूप में शोगी एफेन्दी के धर्म-मंत्रित्व काल से लेकर विश्व न्याय मन्दिर के सृजन तक की बीच की अवधि में - अंजाम दिया, जिसके प्रथम निर्वाचन के लिए उन्होंने बहाई जगत को बड़ी बारीकी से तैयार किया था, खास तौर पर उन 56 राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभाओं को जिन्होंने उस निर्वाचन में भाग लिया। धर्मभुजाओं ने विश्व न्याय मन्दिर के हाथ में एक ऐसा समुदाय सौंपा जो दस वर्षीय योजना की अवधि में इतनी अच्छी तरह रूपांतरित हो चुका था कि हर तर्कसंगत ढंग से बहाउल्लाह के धर्म को एक विश्व-धर्म के रूप में

मानचित्र पर रखा जा सकता था। लन्दन में सम्पन्न हुए विश्व कांग्रेस के भव्य समारोह ने, जिसमें हर महाद्वीप के देशों से बहाइयों ने भाग लिया, इस दावे की वैधता सिद्ध कर दी।

विश्व योजना से भी आगे बढ़कर, धर्मभुजाओं ने अपने सहयोग-समर्थन की पूरी ताकत उस नवगठित विश्व न्याय मन्दिर के पीछे लगा दी जिसका सृजन उन्हीं के शौर्यपूर्ण प्रयासों से संभव हो सका था। इस संस्था की ओर से उन्होंने कई मिशन अपने हाथ में लिए और प्रभुधर्म के प्रसार तथा उसकी संरक्षा सम्बन्धी अपने समीचीन दायित्व का निर्वहन भी करते रहे। चूँकि धर्म संरक्षक की अनुपस्थिति में आगे धर्मभुजाओं की नियुक्ति का कोई मार्ग नहीं बचा था, खास तौर पर पवित्र भूमि में निवास करने वाले धर्मभुजाओं ने वह कार्य किया जिसे सेवा के पथ पर एक विशिष्ट और निर्णायक चिह्न के रूप में देखा जा सकता है : उन्होंने भविष्य में प्रसार और संरक्षण के प्रकार्यों का विस्तार अपनी संस्था की एक विशेष प्रकृति के अंतर्गत करने में विश्व न्याय मन्दिर को सहायता दी। इस प्रकार, 1998 में महाद्वीपीय सलाहकार मंडलों का प्रणयन किया गया और फिर 1973 में शोगी एफेन्दी के लेखों में आभासित अंतर्राष्ट्रीय शिक्षण केन्द्र का सृजन किया गया। इन संस्थाओं की रूप-रेखा तय करने तथा उनके विकास के लिए दिए गए मार्गदर्शनों के माध्यम से विश्व न्याय मन्दिर को प्रदत्त अपनी अथक सहायता से धर्मभुजाओं ने बहाई विश्व के सम्मुख एक और ऐसी विरासत छोड़ी है जिसकी महत्ता का समुचित आकलन आने वाली पीढ़ियाँ ही कर सकेंगी। उनके आखिरी प्रयासों का एक और प्रखर मूल्य अंतर्राष्ट्रीय शिक्षण केन्द्र द्वारा इतने अल्प समय में प्राप्त किए गए रुतबे और सलाहकारों की संस्था के उस सर्वगम्य प्रभाव से परिलक्षित होता है जिसकी पहुँच हमारे विश्वव्यापी समुदाय के कोने-कोने तक हो चुकी है।

यह अत्यंत ही उल्लेखनीय है कि, एक अपवाद को छोड़कर, धर्मभुजाओं का यह निकाय सत्ता के उन प्रलोभनों से अविचलित ही रहा जो प्रायः उन लोगों को भ्रष्ट कर दिया करते हैं जिनके ऊपर परिस्थितिवश आकस्मिक रूप से उच्च पद और प्राधिकार का भार आ पड़ता है। इस प्रसंग में, यह सम्पूर्ण सृष्टि उनके दिग्दर्शन की अंतर्निष्ठा और सिद्धान्तों के प्रति उनकी वफादारी जैसे बेदाग चरित्रों की साक्षी बने बिना नहीं रह सकती।

एक और गौरतलब बात है उस अन्तिम धर्मभुजा का उत्तरजीवन जिन्हें 1955 में एक ही साथ दो पदभार सौंपे गए - धर्मभुजा के रूप में और हुकूकुल्लाह के न्यासी के रूप में भी। यह कि वे हुकूकुल्लाह की संस्था के रूप-निर्धारण और अंततः 2005 में अंतर्राष्ट्रीय हुकूकुल्लाह न्यासी मंडल - जिसकी शाखाएँ पूरी पृथ्वी पर फैली हैं - के गठन के रूप में इसके प्रशासनिक संक्रमण को अंजाम देने में कामयाब रहे, प्रशासनिक व्यवस्था के विकास को प्राप्त होने वाली शुभंकर पुष्टियों की बहुलता और अनवरतता का एक और संकेत है। अतः स्पष्ट है कि धर्मभुजाओं की इस दिव्य-निर्दिष्ट संस्था का कार्य शौर्य युग से लेकर रचनात्मक युग की आरंभिक अवधि तक

प्रभुधर्म की प्रगति के लिए अपरिहार्य था, और निस्संदेह इसके प्रभाव का वर्चस्व बहाउल्लाह की विश्व व्यवस्था के एक अंतर्निहित अंग के रूप में कायम रहेगा। डॉ. वर्गा का निधन बहाई इतिहास के एक अध्याय और उस विश्व व्यवस्था के उद्घाटन के एक नए चरण के समारंभ - इन दोनों के ही पटाक्षेप का सूचक है।

अपने मनो-मस्तिष्क में इन्हीं भाव-उद्वेलनों सहित और अपने सतत बढ़ते विस्मय तथा प्रशंसा-भाव के साथ, हम दुनिया के तमाम हिस्सों में प्रभुधर्म के विकास और सुगठन के प्रति प्रभुधर्म के धर्मभुजाओं के योगदान की विशालता को स्वीकार करते हैं। अपने कृतज्ञ हृदय से हम गहन भाव-प्रवणता के साथ 'दिव्य सहचरों के प्रभु' की प्रवाहपूर्ण वाणी में उच्चरित वरदान का पाठ करते हैंः "प्रभुधर्म के इन धर्मभुजाओं पर प्रकाश और गरिमा, शुभकामना और प्रशंसा विराजे, जिनके माध्यम से धर्म-दृढ़ता की ज्योति प्रभासित हुई है और इस सत्य की संस्थापना हुई है कि चयन का प्राधिकार शक्तिमान, सामर्थ्यवान, अप्रतिबाधित परमेश्वर पर ही विराजता है, और जिनके माध्यम से कृपालुता का महासिंधु आलोड़ित हुआ है तथा समस्त मानवजाति के स्वामी, परमेश्वर, की उदार कृपाओं की सुरभि फैली है।"

-विश्व न्याय मंदिर